दैनिक नवज्योति (जयपुर), 22.4.2004

बांग्लादेश से मिल रहे खतरनाक संदेश

भारत की बांग्लादेश से लगी पूर्वोत्तर राज्यों की सीमा पर हथियारों का विशाल जखीरा मिलना कोई नई बात नहीं है। जब-जब बेगम खालिदा जिया सत्ता में रहती हैं और चुनाव का समय करीब होता है, बम विस्फोटों तथा हथियार बरामद होने का सिलसिला शुरू हो जाता है। लेकिन गत दो अप्रैल की रात को चटगांव में बांग्लादेश की सरकारी जेटी के पास मिले हथियार टनों में थे, जिन्हें दस से ज्यादा ट्रकों में भरकर बांग्लादेश की पुलिस और नौसेना की निगरानी में भारतीय सीमा के बिल्कुल करीब से ले जाया गया। इतने बड़े पैमाने पर इस रास्ते से हथियार ले जाने की यह पहली घटना है और ऐसा नहीं है कि अचानक छापेमारी या तलाशी में बरामद हुए, बल्कि बिल्कुल सुनियोजित तरीके से लाए गए। इसे हल्के ढंग से नहीं लिया जा सकता और भारत के लिए तो यह गम्भीर चिंता का विषय है। क्योंकि ऐसे समय में पूर्वोत्तर की सीमा में छापामारों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले हथियारों का पता चला है जब भारत में न केवल चुनाव प्रक्रिया चल रही है, बल्कि उत्तर पूर्वी राज्यों की विद्रोही गतिविधियों पर काबू पाने में भी थोड़ी-बहुत सफलता मिल रही है। इस घटना का सबसे खतरनाक पहलू है, बांग्लादेश सुरक्षा बलों के पहरे में हथियारों का जहाजों से उतारा जाना और फिर ट्रकों में भरकर अज्ञात स्थान की ओर ले जाया जाना। लेकिन कोई यह स्पष्ट बताने को तैयार नहीं है कि ये हथियार कहां से आए और कहां ले जाए गए। भारतीय संदर्भ में इस सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि हथियार पूर्वोत्तर के विद्रोहियों तक पहुंचाने के लिए लाए गए होंगे, जिन्हें पाक सुरक्षा एजेंसी आईएसआई से बांग्लादेश के जरिए मदद मिलती रही है। चटगांव चकमाओं के चलते पहले से ही खून से रंगा है, जिन्हें उजाड़ने के लिए यहां की पूर्ववर्ती सरकारों ने कोई कसर बाकी नहीं रखी थी। आज यह पूर्वोत्तर के विद्रोहियों का अड्डा है। पाक समर्थित कट्टरपंथी इस्लामी गुटों की बदौलत सत्ता में टिकी बेगम खालिदा जिया की जानकारी के बिना ऐसा कतई सम्भव नहीं है। इसके पीछे उनका इशारा एक ओर अपनी विरोधी शेख हसीना वाजेद की पार्टी अवामी लीग कार्यकर्ताओं के बीच दहशत पैदा करना हो सकता है, जिसने उनके इस्तीफे की मांग के लिए आन्दोलन चला रखा है, क्योंकि दो साल बाद चुनाव का सामना करना है और दूसरा भारतीय चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने की भी मंशा रही होगी। पूर्वोत्तर के कई ऐसे संगठनों ने चुनाव बायकाट की धमकी दे रखी है, जिनका एक पैर बांग्लादेश में है।

हथियारों में अधिकांश संख्या स्वचालित राइफलों, राकेट लांचरों, मैगजीन, मोर्टार और बेहद शक्तिशाली बमों की है जिसका इस्तेमाल जम्मू व कश्मीर तथा पूर्वोत्तर में सक्रिय उग्रवादी सुरक्षा बलों के खिलाफ करते हैं।

गौरतलब है कि बांग्लादेश में सरकार अप्रत्यक्ष रूप से सेना चलाती है, चाहे वो किसी भी पार्टी की क्यों न हो। बेगम खालिदा के पति मरहूम जियाउर्रहमान

देश-विदेश / मयंक शेखर

सेना के जनरल और शासक रह चुके हैं, इसलिए इनके प्रति सेना की यों ही हमदर्दी है।

हथियारों का मिलना और उत्तर पूर्व के विद्रोहियों को बांग्लादेश की मदद पुरानी बात है। इस बार नयी बात है, वो समय और जगह जिसका इस्तेमाल बांग्लादेश ने किया है। चटगांव बांग्लादेश की व्यावसायिक राजधानी के साथ-साथ अपहरण केन्द्र



के नाम से भी विख्यात है। यह जगह पूर्वोत्तर की सीमा से सटी है, और त्रिपुरा के कोक्स बाजार के रास्ते वहां के व्यापारी अपना कारोबार चलाते हैं। यहां आए दिन व्यापारियों का अपहरण होता है और उनसे फिरौती की मुंहमांगी रकम वसूली जाती है।

31 मार्च को बांग्लादेश सरकार उल्फा नेता अनूप चेतिया को भारत को सौंपे जाने से यह कहकर इंकार कर देती है कि उसके खिलाफ यहां की अदालत में मुकदमा चल रहा है और ठीक एक दिन बाद उसी जगह हथियारों का जखीरा मिलता है, जिस रास्ते का धड़ल्ले से उल्फा नेता इस्तेमाल करते हैं। उल्फा के खिलाफ भूटान सरकार से सहयोग मिलने से उत्साहित भारत सरकार बांग्लादेश से भी ऐसे ही सहयोग की उम्मीद कर रही थी, जिसका जवाब मिला है। जनवरी में सीमा सुरक्षाबल के महानिदेशक अजय राज शर्मा ने बांग्लादेश राइफल्स को जब बांग्लादेश में उल्फा समेत असम और त्रिपुरा के विद्रोही गुटों के दो सौ के करीब अड्डों की सूची सौंपी तो उसे नकार दिया गया और अब वहां की विपक्षी नेता का ही कहना है कि बांग्लादेश में जमायतइस्लामी के बारह हथियार प्रशिक्षण केन्द्र काम कर रहे हैं और उनमें आधे से ज्यादा चटगांव के आसपास केन्द्रित हैं। बेगम खालिदा ने न केवल उल्फा के खिलाफ कार्रवाई करने से इंकार कर दिया, बल्कि उसके नेताओं को मजे की जिन्दगी मयस्सर करा रखी है, जिनमें अपूप चेतिया के साथ-साथ परेश बरूआ भी है।

अब यह इंतजाम लगाया जा रहा है कि चेतिया को राजनीतिक शरण मिल जाए। वैसे तो पाकिस्तान की तरह बांग्लादेश में भी भारत विरोधी कार्ड चलता है और बेगम-खालिदा तथा हसीना दोनों ही अपने-अपने राजनीतिक फायदे के लिए इस कार्ड को भुनाती रहती हैं। लेकिन खालिदा ने अपने शासनकाल में भारत विरोधी रवैए के कुछ नए कीर्तिमान स्थापित किए। सरकारी स्तर पर सहयोग की बातचीत जारी रखी और अप्रत्यक्ष रूप से पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर की सीमा पर विद्रोहियों को फलने-फूलने में आईएसआई के साथ सहयोग बरकरार रखा।

सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है बांग्लादेश में उन संगठनों का सरकार में हावी होना जो मुक्ति संग्राम में पाकिस्तान की तरफदारी कर रहे थे और आज भारत विरोधी मुहिम चला रहे हैं। जिसकी बदौलत बांग्लादेश एक आजाद देश कहलाया। इसलिए भारत को हथियारों के अब तक के विशालतम जखीरे से जुड़े अहम सवालों का जवाब ढूंढना ही होगा। 2001 में इसी अप्रैल के महीने में बांग्लादेश राइफल्स के जवानों ने असम और मेघालय की सीमा पर पीरदीवा गांव में भारतीय सीमा सुरक्षाबल की चौकियों पर रात को सोते में हमला करके 18 जवानों को मौत के घाट उतार दिया। भारतीय जवानों को जिस घृणित और अमानवीय तरीके से मारा गया, एक पड़ोसी के बारे में वैसी बात सोची भी नहीं जा सकती।